अधिगम क्षतिपूर्ति में बाल साहित्य की भूमिका

साथियो, सादर अभिवादन!

'शैक्षिक प्रवाह' के इस संस्करण में स्कूली शिक्षा में बाल साहित्य की भूमिका पर विमर्श है। दरअसल, औपचारिक शिक्षा में बाल साहित्य की महत्ता पर किसी प्रकार का प्रश्न नहीं उठता है लेकिन वर्तमान सन्दर्भ में इसके बारे में चिंतन व इसकी ओर विशेष प्रयास और अधिक महत्वपूर्ण हैं। हमने पिछले अंकों में भी कोरोना महामारी के कारण हुई अधिगम की क्षति पर बात की है। यह एक गम्भीर विषय है इसलिये इसमें चिंतन व बहस अनिवार्य है। विद्यालयी शिक्षा सत्र 2019–20 से 2021–22 तक समय–समय पर बाधित रही है। हमने इस बात को भी रेखांकित किया है कि इस बाधा में कुछ प्रयास ऑनलाईन माध्यम से किये गये लेकिन सरकारी स्कूली व्यवस्था में यह अपर्याप्त रही क्योंकि सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों के पास ऑनलाईन शिक्षा के लिये आवश्यक बुनियादी उपकरणों का अभाव था। यह बात भी दीगर है कि किसी भी प्रकार ऑनलाईन शिक्षा व्यवस्था स्कूली शिक्षा व्यवस्था का पर्याय नहीं हो सकती।

यदि शिक्षा में आयी इस बाधा को साधारण रूप में समझने का प्रयास करें तो यह इस प्रकार का रहेगा कि सत्र 2019–20 में जो बच्चा कक्षा 3 में था वह सत्र 2022–23 में कक्षा 6 में आ जायेगा। आज की स्थिति यह है कि वह बच्चा कक्षा 3 का भूल चुका है कक्षा 4 उसने ठीक से पढ़ी नहीं और कक्षा 5 आंशिक रूप से पढ़ी। यदि हमने उसके लिये कुछ सोचा नहीं तो सत्र 2022–23 उसके लिये भयावह साबित होगी। इस बात के कई उदाहरण हैं कि जब औपचारिक शिक्षा बोझिल होती है तो बच्चे उसे छोड़ देते हैं और यह बात सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों के परिप्रेक्ष्य में ज्यादा देखने को मिलती है क्योंकि इन बच्चों की आर्थिक स्थिति के कारण यह बात उनके लिये अधिक संवेदनशील है।

बात सिर्फ इतनी नहीं है। इसके अलावा औपचारिक शिक्षा में सीखने का एक प्रवाह होता है जो कि कक्षा दर कक्षा आगे बढ़ता है। उदाहरण के लिये कोई बच्चा गणित विषय में जोड़ना सीख रहा होता है तो प्राथमिक स्तर में शुरुआत से उसे इसके कई स्तरों से गुजरना होता है। आज के परिप्रेक्ष्य में अधिगम में हुई क्षति को ध्यान में रखने की जरूरत है। इस बात की स्पष्टता होनी जरूरी है कि सत्र 2022–23 को हम एक पारंपरिक सत्र की तरह मानकर न चलें। इस सत्र के स्पष्ट रूप से दो उद्देश्य हमें लेने पड़ेंगे। पहला हमें बच्चे के पिछले सत्रों के अधिगम की क्षति की भरपाई और सत्र 2022–23 वाली कक्षा का अधिगम देना। यह तभी हो पायेगा जब हम सत्र 2022–23 में इन सभी कक्षाओं के अनिवार्य सीखने के प्रतिफलों के आधार पर बच्चे के साथ काम करें।

औपचारिक स्कूली शिक्षा में आधारभूत साक्षरता का एक महत्वपूर्ण स्थान है। वस्तुतः यह एक प्रक्रिया है जो कि औपचारिक शिक्षा को आगे बढ़ाती है क्योंकि भाषा सभी विषयों में समझ विकसित करने का महत्वपूर्ण माध्यम है। बच्चों में आधारभूत साक्षरता उन्हें औपचारिक शिक्षा में सफल बनाती है क्योंकि भाषा न मात्र विभिन्न विषयों के ज्ञान के लिये आवश्यक है बल्कि बच्चे में विभिन्न कौशल यानी समझ और विचारों के विश्लेषण और संश्लेषण में मदद करती है। इसमें बाल साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

'शैक्षिक प्रवाह' के इस अंक में हमने बाल साहित्य की भूमिका पर बात की है। आज की परिस्थिति में जबकि बच्चे औपचारिक शिक्षा से बाहर रहे और उनके पास पढ़ने व लिखने के अपर्याप्त अवसर रहे, ऐसे में हमें बच्चों को ऐसे मौके देने होंगे कि वे उनके लिये सुलभ और सुरुचिपूर्ण हों और हमें इस बात को स्वीकार कर लेना चाहिये कि पाठ्य पुस्तकें इन मानकों पर खरी नहीं उतरती हैं इसलिये बेहतर बाल साहित्य ही एक विकल्प है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के आलोक में आधारभूत साक्षरता पर समयबद्ध कार्यक्रम की अवधारणा तथा अन्य कार्यक्रम यथा 100 दिन का रीडिंग कैम्पेन आदि कार्यक्रम भी तभी सफल हो पायेंगे जब बाल साहित्य का इसमें सोचा समझा समावेश हो क्योंकि भाषा पर पकड़ बनाने के लिये बच्चे को ऐसा साहित्य देना पड़ेगा जो कि उसके लिये रुचिपूर्ण हो और यह तभी सम्भव है जब हम उसे बाल साहित्य की दुनिया में ले जायेंगे। हमें इस बात की स्पष्टता होनी होगी कि सरकारी स्कूलों में पढ़ रहे बच्चों के व्यक्तिगत जीवन में इस तरह के मौके अक्सर नहीं होते। 'शैक्षिक प्रवाह' का फलक अब बढ़ चला है। अब यह एक या दो राज्यों तक सीमित नहीं रही। हमें प्रसन्नता होती है जब हमारे पास विभिन्न राज्यों से पत्रिका के बारे में प्रतिक्रियायें आती है। दरअसल, किसी भी पत्रिका का संबल उसके पाठक होते हैं। हमेशा की तरह आपसे अपेक्षा रहेगी कि आप अपने अमूल्य सुझाव हमें देते रहेंगे ताकि हम बेहतर इस पत्रिका के माध्यम से आपको बेहतर लेख उपलब्ध कराते रहें।

आपका साथी

कैलाश चन्द्र काण्डपाल